॥ सा विद्या या विमुक्तये ॥
गोरक्षनाथ-राजकीय-संस्कृत-महाविद्यालयः नाहनम्
GORAKSHNATH GOVT. SANSKRIT COLLEGE NAHAN
(Affiliated to Himachal Pradesh University Shimla)
Under Education Dept. of HP Govt.
Distt. Sirmaur. H.P. -173001. Telephone -01702-226812
Website www.gscnahan.in mail- gscnahan-hp@nic.in

Paper Published List in

UGC Care List Journals, Non-UGC Care List Journals & Citations

And Book Published / Chapter In Book

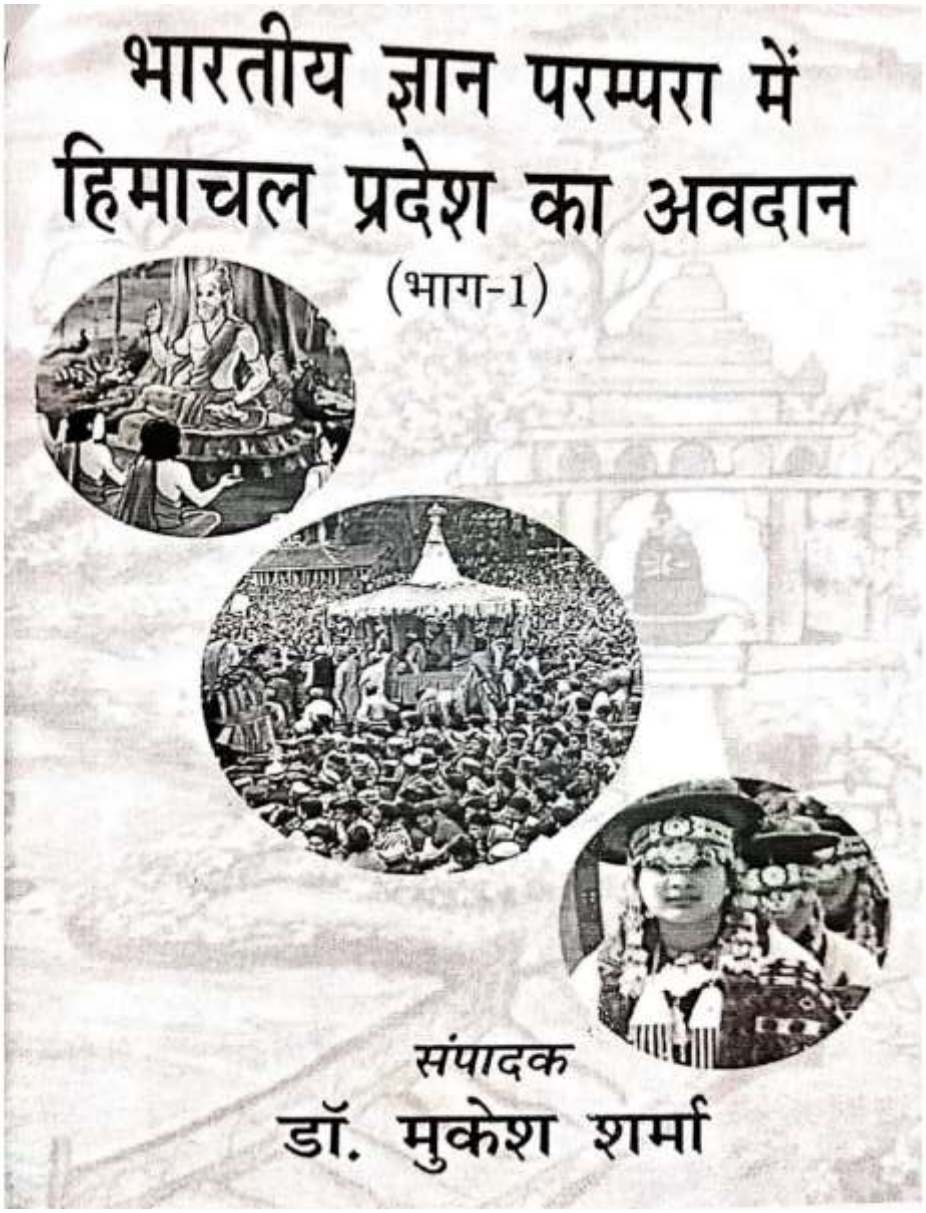

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. मुकेश शर्मा

जन्म तिथि : 08 सितम्बर, 1985

जन्म स्थान : गांव मोहड़ा, डाकघर कपाहड़ा, तहसील घुमारवीं, जिला बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश।

शिक्षा : शास्त्री, राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, डंगार, बिलासपुर (हि.प्र.), 2007

-आचार्य (फलित ज्योतिष), केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर, भोपाल (म.प्र.), 2010

-शिक्षाशास्त्री, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर, भोपाल (म.प्र.), 2011

-शिक्षाचार्य, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2012

-विद्यावारिधि (Ph-D), केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2015

-विश्वविद्यालय अनुदान आयोग राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा, संस्कृत परम्परागत विषय- 73, 2016

-दर्शनआचार्य, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, 2019

-हिन्दू अध्ययन डिप्लोमा, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 2022

शिक्षण अनुभव : 10 वर्ष (01 वर्ष-स्नातक पूर्व आदर्श संस्कृत महाविद्यालय डोहगी, बंगाणा, ऊना, हिमाचल प्रदेश एवं 09 वर्ष- केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय वेदव्यास परिसर, बलाहर, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश)

शोध मार्गदर्शन : एक पीएचडी शोधार्थी का सह-मार्गदर्शन 2024 से जारी।

विशेषज्ञता : भारतीय शिक्षा, भारतीय संस्कृति, भारतीय ज्ञान परम्परागत विषय, भारतीय प्राचीन इतिहास, भारतीय शिक्षा नीतियाँ, पाठ्यचर्या, शैक्षिक प्रौद्योगिकी।

शोधपत्र एवं सेमिनार : विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी एवं परिसंवादों में 17 से अधिक शोधपत्र वाचन एवं 20 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित।

पुस्तक : "शिक्षाशास्त्रदृष्ट्या ज्योतिषशिक्षणविचारः", प्रकाशन वर्ष 2017

सम्पादन : "बिलासपुर के वीर सैनिक", भारतीय इतिहास संकलन योजना समिति हिमाचल प्रदेश बिलासपुर, प्रकाशन वर्ष 2019

एप : "हिन्दी संस्कृत शब्दकोश", सम्पादन वर्ष 2020 (उपलब्ध- गुगल प्ले स्टोर पर)

सम्प्रति : सहायक आचार्य (संविदा), शिक्षाशास्त्र-विभागाध्यक्ष, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय वेदव्यास परिसर, बलाहर, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश।

सम्पर्क सूत्र : 94186-47583, 82198-44056

Available on

₹ 995

ISBN 978-93-93751-84-3

देवयानी पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
781, ग्राउंड फ्लोर, बागवान अपार्टमेंट
सेक्टर-28, रोहिणी, दिल्ली-110042

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय (देव एवं नाग परम्परा) 1-48

1.1) हिमाचल प्रदेश में देव परम्परा: एक विवेचनात्मक अध्ययन — डॉ. [illegible] वर्मा — 1-27

1.2) हिमाचल के [illegible] जनपद में नाग परम्परा का सांस्कृतिक अध्ययन — [illegible] कुमार — 28-47

द्वितीय अध्याय (कवि परम्परा) 49-88

2.1) भारतीय ज्ञान परम्परा और महर्षि व्यास की तपोभूमि हिमाचल — प्रो. [illegible] चौहान — 50-66

2.2) भारतीय ज्ञान परम्परा के आविर्भाव में कवि [illegible] का अवदान — डॉ. [illegible] कुमार — 67-78

2.3) पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में [illegible] कवि परम्परा — डॉ. [illegible] शर्मा — 79-88

तृतीय अध्याय (संस्कृत कवि परम्परा) 89-112

3.1) भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक पं. [illegible] शास्त्री — डॉ. प्रतिज्ञा शर्मा — 90-99

3.2) भारतीय ज्ञान परम्परा में आचार्य [illegible] शर्मा का अवदान — डॉ. [illegible] कुमार — 100-112

चतुर्थ अध्याय (ज्योतिष तथा विद्या परम्परा) 113-136

4.1) हिमाचल में [illegible] व [illegible] के गुरुकुल और उनमें [illegible] पाण्डुलिपियाँ — डॉ. ओम प्रकाश शर्मा — 115-125

4.2) भारतीय ज्ञान परम्परा में हिमाचल के [illegible] का योगदान — डॉ. [illegible] शर्मा — 126-136

पंचम अध्याय (हिमाचल की ग्राम परम्परा) 137-232

5.1) भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक हिमाचल के गाँव: [illegible] — डॉ. [illegible] कुमार — 139-152

5.2) भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में [illegible] ग्राम का [illegible] — डॉ. [illegible] कुमार, अभिषेक शर्मा — 153-170

5.3) [illegible] की [illegible]: इतिहास, संस्कृति और ज्ञान परम्परा — डॉ. [illegible] कुमार, डॉ. मुकेश शर्मा — 171-183

5.4) हिमाचल प्रदेश की ग्रामीण [illegible] में [illegible] — डॉ. [illegible] शर्मा — 184-192

5.5) [illegible] — [illegible] देवी — 193-205

5.6) [illegible] का ऐतिहासिक एवं परम्परागत अध्ययन — डॉ. मुकेश शर्मा, पवन कुमार — 206-232

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

"महासूचरितम्"

'जय महासू देवता'

तारा चन्द शर्मा (पाबूच)
सहायक आचार्य
(राजनीति शास्त्र)
गोरक्षनाथ राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, नाहन
जिला- सिरमौर, हिमाचल प्रदेश

समकालीन प्रकाशन
नई दिल्ली-110002

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

20. रूपम कुमारी 38
21. नुपुर श्रीवास्तव 40
22. Yogesh Shah 42
23. सतिश शंकर कांबले 46
24. डॉ रमेश कुमार कोरडे 48
25. संजू कुमारी पूर्वे 50
26. शिखा गर्ग 52
27. रिंकी तिवारी 54
28. डॉ. तरुण राय कागा 56
29. डॉ. कुसुम डोगरा 58
30. नीलम प्रसाद 60
31. डॉ. सुमिता शर्मा 62
32. सुजाता कुमारी 64
33. अरुण नागर 72
34. राखी मधुकर 74
35. अरुण विशुनपुरी 76
36. मानस कुमार 88
37. प्रा सुप्रिया विजय शेरे 90
38. डॉ. शीता बिष्ट 93
39. कृष्ण देव तिवारी "शांडिल्य" 95
40. किर्ती काशिनाथ होसुरकर 99
41. सीता कुमारी 101
42. Anu Saxena 105
43. डॉ. अनिता देवी 108

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. सुमित
सहायक आचार्य
राजकीय संस्कृत महाविद्यालय नाहन (हि.प्र.)

भारतीय समाज का जो स्वरूप हमें दिखाई देता है उसकी पृष्ठभूमि वैदिक समय से प्रारम्भ होती है हमारी सामाजिक संरचना द्विलिंगीय होती है- स्त्री एवं पुरुष संसार में केवल दो लिंगो स्त्री और पुरुष को मान्यता मिली है इन दो विपरीत लिंगों को ही सृष्टि का आधार माना गया है। सृष्टि के प्रारम्भ में जो अविभक्त तत्व था, वह सृष्टि संरचना के समय दो भागों में आ गया। बृहदारण्यक उपनिषद में वर्णित है कि प्रजापति अकेला था, उसका मन नहीं लगा तो उसने अपने शरीर के दो भाग कर लिये। आधे भाग से वह प्रजापति स्त्री व आधे भाग से पुरुष बन गया तब उसे आनन्द का अनुभव हुआ जब पुरुष स्त्री से संयुक्त हुआ तब मनुष्य की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार स्त्री एवं पुरुष रूप द्विलिंगीय संरचना प्राचीन समय से ही देखी जा सकती है।

इसके अतिरिक्त समाज में एक वर्ग और भी विद्यमान है जो न तो पूर्ण रूप से स्त्री है न पुरुष वह लैंगिक विकलांग होते हैं इन्हें तृतीय लिंगी, उभयलिंगी, तृतीय प्रकृति हिजड़ा, खुसरा, शिखण्डी आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। परिनिष्ठित शब्दावली में इन्हें किन्नर कहा जाता है किन्नर हिन्दी के दो शब्दों कि और नर से मिलकर बना है, जिसका तात्पर्य विकृत अनाकृति एवं ऐसे वर्ग से है जो न स्त्री है न पुरुष जनसामान्य भाषा में इन्हें हिजड़ा कहा जाता है। वामन शिवराम आप्टे संस्कृत-हिन्दी कोष में किन्नर शब्द का बुरा या विकृत -पुरुष, पुराणोक्त पुरुष जिसका सिर घोड़े का हो तथा शरीर मनुष्य का, कुबेर के सेवक नीच पुरुष आदि अर्थ बताए गये हैं। The Concise Sanskrit english Dictionary में भी किन्नर शब्द का अर्थ इसी के समान है।

A mythical being with a human शब्द पहले यक्ष, गंधर्व, राक्षस, अप्सरा आदि समान जाति लिए प्रयुक्त किया जाता था। इसके साथ किन्नर का एक विकृत पुरुष भी इसलिए अब शब्द हिजड़ो लिए प्रयुक्त तथा पौराणिक ग्रन्थों, वेद-पुराणों और साहित्य किन्नर हिमालय क्षेत्र बसने वाली अति प्रतिष्ठित महत्वपूर्ण आदिम जाति जिसके वंशज वर्तमान जनजातीय जिला किन्नौर निवासी माने जाते वायुपुराण महानील पर्वत किन्नरों निवास स्थान भी बताया गया है। सत्कार अनुसार गन्धर्व किन्नर आदिम जातियाँ थी पर बाद पौराणिक गाथाओं में इस रूप प्रयुक्त होकर पौराणिक देव योनियाँ रूप आई।

कन्हैया मणिक लाल मुन्शी किन्नरों सम्बन्ध लिखते हैं उनके चेहरे घोड़े की भांति होते वैशाखी जब सामूहिक नृत्य करते हर किन्नर घोड़े मुखौटा पहनता बाण ने उनको नृत्य एवं संगीत प्रवीण बताया है। पुराणों किन्नरों को देवों का गायक बताया गया। स्पष्ट हिजड़ों लिए किन्नर शब्द का अर्थ अर्थ भी कि पुंस्त्व धर्मगत होते हिजड़ो रूप किन्नर भाव समय से देखा रामायण पुराण काल कादम्बरी, रघुवंश इत्यादि साहित्यिक ग्रन्थों भी इनका वर्णन प्राप्त होता सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण अश्वमुखी शरीर वाले किन्नरों का उल्लेख प्राप्त होता है।

रामायण में किन्नरों से सम्बन्धित एक कथा विस्तार से प्राप्त होती है। श्रीराम एक कथा में कहते है कि पूर्वकाल में प्रजापति कर्दम के इल नाम का धर्मात्मा पुत्र हुआ। वे राजा एक बार कुछ सेवकों के साथ शिकार पर गए और वहाँ जा पहुंचे जहाँ भगवान शिव देवी पार्वती के साथ विहार कर रहे थे। देवी की प्रसन्नता के लिए भगवान शिव ने स्वयं को स्त्री बना लिया जिसके कारण उस पर्वत के सभी पुल्लिंग जंतु तथा वृक्ष भी स्त्रीलिङ्ग में परिणत हो गए। जब इल यहाँ आते है तो वे भी सेवकों सहित स्त्री बन जाते हैं। उनकी यह दशा भगवान शिव के कारण हुई है यह जानकर वे भयभीत होकर उनके चरणों में जा पहुँचते हैं। भगवान शिव उन्हें पुरुषत्व छोड़कर कुछ भी वर मांगने को

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

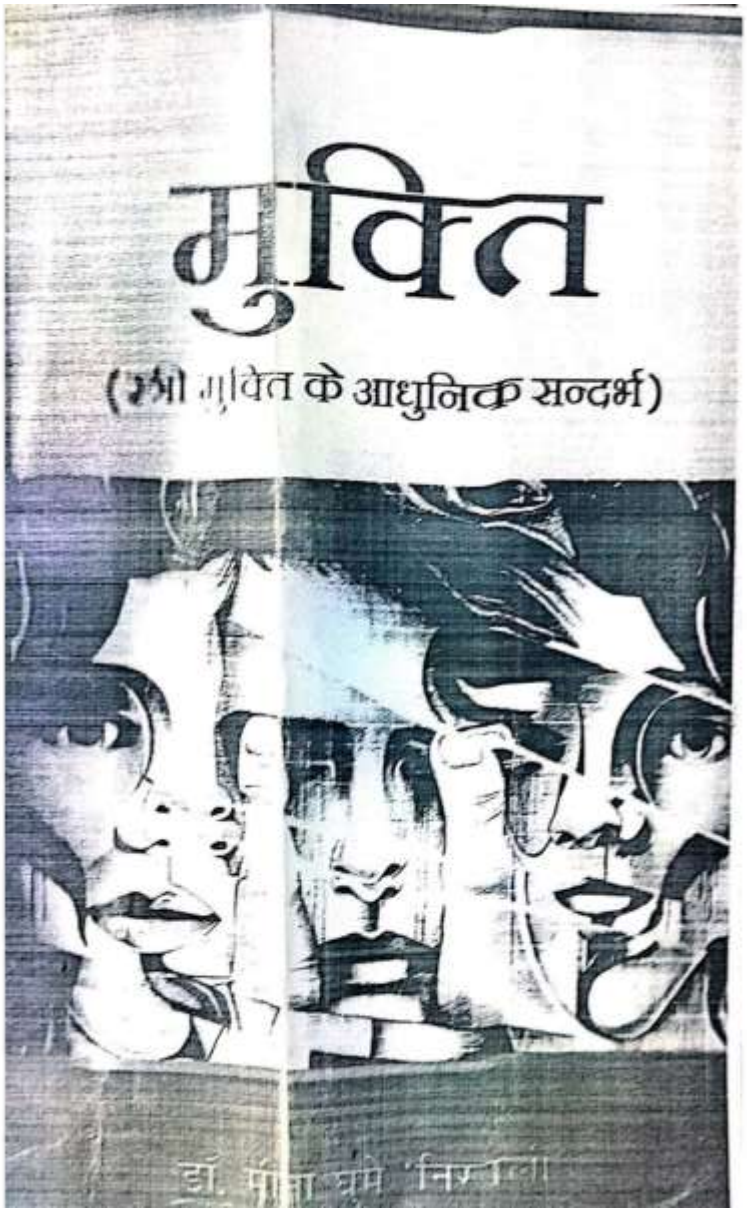

डॉ. सुमिता
सहायक आचार्य , साहित्य विभाग
गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज, नाहन,
हिमाचल प्रदेश 173001
9805270251
Sharmasumita72@gmail.com

माँ

हर वो चीज़ जो घर पर बनती है
मुझे जरूर खिलाती है मेरी माँ ,
मैं मना करती रहती हूँ
पर कहाँ मानती है मेरी माँ ।

अपने दुःख मुझसे छिपाती है
आँखों की नमी कभी दिखाती नहीं,
पर हर वो बात जो उसे खुशी देती है
वो मुझे जरूर बताती है मेरी माँ ।

लड़की पराया धन है
ये कहकर विदा किया था जिसने मुझे ,
मेरा घर सूना है तेरे बिना
ये विश्वास हर पल दिलाती है मेरी माँ।

कोई भी गलत होता था
मुझे ही समझाया जिसने,
झुकने से रिश्ते बच जाते है
ये अकेले में समझाती है मेरी माँ ।

कदम - क़दम पर संभाला था
साथ दिया है आगे बढ़ाने में ,
फिर डगमगा गये अगर क़दम मेरे
तो आगे बढ़कर सम्भाल लेती है माँ ।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

मोक्ष प्रदायक गया तीर्थ

डॉ. सुमिता शर्मा आचार्य (साहित्य)

गया नगरी हमारी भारतीय संस्कृति की धरोहर है। बिहार की राजधानी पटना से [illegible] 104 कि.मी. की दूरी पर बसा है। धार्मिक दृष्टि से गया हिन्दुओं के लिए ही नहीं [illegible] बौद्ध धर्म के मानने वालों के लिए भी आदरणीय है। बौद्ध धर्म के अनुयायी इसे [illegible] बुद्ध के ज्ञान का क्षेत्र मानते हैं जबकि हिन्दू गया को मुक्ति का क्षेत्र मानते हैं। [illegible] देश तथा विदेशों से हिन्दू आकर गया में अपने मृत परिवार की शान्ति तथा मोक्ष [illegible] से श्राद्ध तर्पण और पिण्डदान करते देखे जाते हैं। इसके महत्व के ज्ञान के [illegible] अध्ययन करने के लिए भी विभिन्न मतावलम्बी यहाँ आते रहते है।

पुरुषार्थ चतुष्टय में अन्तिम पुरूषार्थ मोक्ष है। इसे परम पुरूषार्थ के रूप में स्वीकार [illegible] भारतीय संस्कृति में उसकी प्राप्ति के अनेक उपाय बताय गए हैं। ईश्वर की [illegible] भी उसने एक महत्वपूर्ण उपाय है। ईश्वर की उपासना द्वारा भी उस परंतत्त्व ब्रह्म [illegible] की जा सकती है।

गया भी एक ऐसा स्थल है जहाँ सगुण ब्रह्म भगवान विष्णु की उपासना द्वारा [illegible] मोक्ष को प्राप्त करना सम्भव है! अग्नि पुराण में गया को ब्रह्म, विष्णु तथा निवास [illegible] गया है।

"विष्णो : शम्भो ब्रह्मणश्च क्षेत्रं तव भविष्यति" (अग्नि पुराण, 114. 31)

[illegible] पुराण के अनुसार ही मनुष्य की मुक्ति चार प्रकार से होती है। ब्रह्मज्ञान से गया श्राद्ध [illegible] गोशाला में शरीर त्याग से और कुरू क्षेत्र में निवास करने से:–

"ब्रह्मज्ञान गया श्राद्ध गोगृहे मरणं तथा।
वासः पुंसां कुरु क्षेत्रे मुक्तिरेषा चतुर्विधा।। (अग्नि पुराण,115. 33)

इस प्रकार भारतीय परम्परानुसार विश्वास किया जाता है कि तीर्थ मोक्ष प्राप्ति का [illegible] है। तीर्थ पर स्नान, दान, पुण्य एवं साधु – सन्तों के सत्संग से मनुष्य भव सागर [illegible] जाता है। इसी विश्वास के कारण प्राचीन काल से लेकर आज तक तीर्थ यात्राएँ [illegible] आ रही हैं। 'तरति पापादिकं यस्मात्' तु धातु से थुक् प्रत्यय करने पर तीर्थ शब्द [illegible] है जिसका अर्थ "संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ" में रास्ता, मार्ग घाट, जलस्थान, पवित्र, [illegible] पवित्र या पुण्यप्रद, व्यक्ति, गुरू, उद्गम स्थान, यज्ञ, हाथ के कई भाग जो देव और [illegible] करने के लिए पवित्र माने जाते हैं इस प्रकार से किया गया है।

गरूड पुराण में तो तीर्थों की सुषमा का विस्तारपुर्वक वर्णन किया गया है। वहीं [illegible] महात्म्य का वर्णन करते हुये गरूड पुराण में स्पष्ट किया गया है कि भगवान् विष्णु [illegible] प्रदान करने के लिए गदाधर के रूप में वहाँ पर स्थित है।

Scanned with OKEN Scanner

कल्याणी

(दशम संयुक्त अंक 2020-2024)

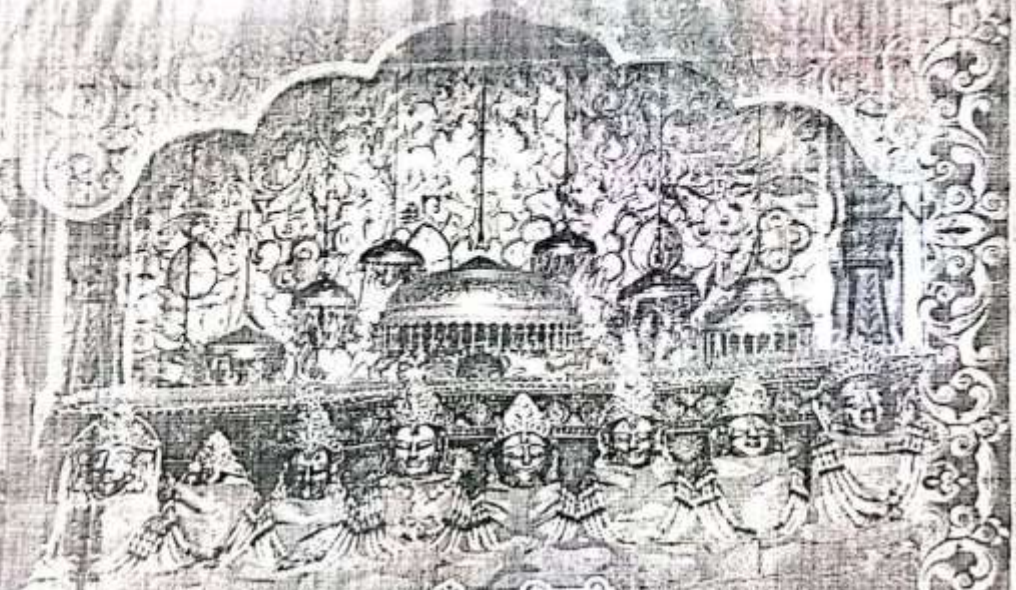

जय माँ शूलिनी

श्री सनातन धर्म सभा (पंजी०) रबौग

जिला सोलन (हि०प्र०)

Scanned with OKEN Scanner

कि पूरी नारी जाति फिर से सार्वजनिक उद्योग में प्रवेश करे और आवश्यकता है कि समाज की आर्थिक इकाई होने का वैयक्तिक, पारिवारिक गुण नष्ट कर दिया जाए।'6

'चक्करघिनी' कहानी की अन्तर्वस्तु न केवल विशिष्ट है अपितु लेखिका ने उसके जटिल रचाव को भी साधा है। कथा नायिका विनीता के माध्यम से पारम्परिक व आधुनिक स्त्री छवि का द्वन्द्व उजागर किया गया है। कहानी के पठान और उसके पौरूष का तपन में मोम-सी पिघलने वाली मिसेज दत्ता का चरित्र अत्यन्त सुंदर ढंग से चित्रित हुआ है। 'तुक' कहानी लाख कोशिश करने पर भी असफल रहने वाली स्त्री की मनोव्यवस्था को चित्रित करती है। 'एक और विवाह' कहानी में मां-बाप द्वारा अपने मान-सम्मान की वृद्धि के लिए बेटी का विवाह विदेशी व्यक्ति से करने की कथा है। कोमल का विवाह अमेरिकी पुरुष मदन से इसीलिए किया जाता है क्योंकि वह अमीर है। संबंधों का बनना और टूटना अर्थ पर आधारित हो गया है। आर्थिक विपन्नता दाम्पत्य जीवन के संबंधों में कड़वाहट और टकराहट का कारण बनती है जिससे पति - पत्नी दाम्पत्य जीवन के सुख - दुख को भूलकर उसे एक बोझ की तरह झेलते हैं।

वस्तुतः आज बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में दाम्पत्य संबंधों को प्रभावित करने वाला आदि यदि कोई मुख्य कारक है तो वह है - पति-पत्नी की आर्थिक विषमता आर्थिक विषमता के कारण ही आज की युवा पीढ़ी कुंठित हो रही है। इससे उत्पन्न समस्याओं का मृदुला गर्ग ने सफलता पूर्वक चित्रण किया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि समकालीन साहित्य की प्रत्येक विधा स्त्री जीवन के सभी संघर्षों को स्वर प्रदान करती है। नारी का संघर्ष पुरुषों से बराबरी करने या उनसे आगे निकल जाने का नहीं बल्कि उसका संघर्ष समाज में, परिवार में, स्वयं को स्थापित करने तथा अपनी अस्मिता की तलाश के लिए है। इसी को ध्यान में रखते हुए हिंदी की समकालीन महिला कथाकारों ने जीवन के बहुविध पक्ष को लेकर लेखन कार्य किया है। तथापि इसमें संदेह नहीं है कि इसके केंद्र में नारी ही रही है। नारी जीवन की अन्तःबोध परिस्थितियों के अनुरूप पहलुओं की प्रस्तुति के कारण इनकी कृतियां बहुमूल्य एवं विशिष्ट स्थान रखती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. मनु मनुस्मृति -, अध्याय -3, श्लोक -56
2. बाहरी डॉ. हरदेव - हिन्दी अंग्रेजी शब्दकोश, पृष्ठ -593
3. सं वसु डॉ. नगेन्द्रनाथ - हिन्दी विश्वकोश खण्ड - 21, पृष्ठ -478
4. खैतान प्रभा - स्त्री उपेक्षिता, हिंदी पॉकेट बुक्स नई दिल्ली, संस्करण 2008 -, पृष्ठिका -
5. गर्ग मृदुला चुकते नहीं सवाल -, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, पृ152 स
6. पाण्डेय दर्शन - नारी अस्मिता की परख संजय प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण - 2004, पृ 2

वैदिक समय में नारी की स्थिति

डॉ. सुनिता (सहायक आचार्य)
राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, [illegible]

वैदिक काल से ही मानव अपनी बाह्याभ्यन्तर प्रगति के लिए सतत् प्रयत्नशील रहा है। सम्पूर्ण [illegible] दो नितान्त परस्पर विरोधी दृष्टिकोणों से देखा गया है। एक तरफ उस समय नारी को पूर्ण सम्मान प्राप्त था वहीं कहीं - कहीं पुरुषों की तुलना में स्त्री की उपयोगिता कम बताई गई है। [illegible] पुत्र जहाँ वंश की साम्पत्तिक वृद्धि करने में पिता का सहयोग करता था वहीं पुत्री वंश के लिए [illegible] एक उत्तरदायित्व थी। अपने माता पिता के घर में वह सम्पत्ति के समान बताई गई है। ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर पुत्र प्राप्ति के लिए प्रार्थनाएं की गई है।' अथर्ववेद में तो पुत्र प्राप्ति के हेतु विविध [illegible] का वर्णन किया गया है एवं पुत्री की अपेक्षा पुत्र को अधिक महत्व दिया गया है।' ऐतरेय ब्राह्मण में एक स्थान पर पुत्र को तो दिव्य ज्योति बताया है, परन्तु पुत्री को कृपण कहा है।'

पुत्र जन्म की अपेक्षा पुत्री जन्म की यह न्यूनाधिक अप्रियता केवल सामाजिक एवं आर्थिक कारणों से थी। परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि प्राचीन भारत में नारी के संरक्षक उसके साथ दुर्व्यवहार अथवा अत्याचार करते थे। वैदिक युग में नारी का स्थान सर्वथा प्रशंसनीय एवं गौरवपूर्ण रहा है। [illegible] स्त्रियों की स्थिति सम्मान जनक थी। गृहस्थ जीवन में भी उनका विशेष स्थान था। पुत्री के [illegible] वहीं माता, पत्नी एवं गुरुपत्नी के रूप में वह सर्वदा सम्माननीय थी। वैदिक काल में बाल विवाह की प्रथा न थी। कन्या का विवाह वयस्कावस्था में ही होता था। ऋग्वेद में [illegible] कन्या को [illegible] के रूप में प्रदर्शित किया गया है।' एक अन्य स्थान पर [illegible] के रूप में [illegible] किया गया है।'

वैदिक काल में अनेक ऐसे उल्लेख प्राप्त होते है जिससे ज्ञात होता है कि गृहस्थ कार्यों के [illegible] को संस्कृत के [illegible] प्रधान उपायों की भी पर्याप्त शिक्षा दी जाती थी। इसमें [illegible] विशेष [illegible] ऋग्वेद में [illegible] हुई स्त्रियों का वर्णन प्राप्त होता है।' गृहस्थ कार्यों [illegible] कलाओं के अतिरिक्त नारी को वैदिक शिक्षा का भी अधिकार था। वैदिक समय में पुत्र के [illegible] ही पुत्री की शिक्षा आवश्यक समझी जाती थी। यजुर्वेद में शिक्षित स्त्री - पुरुष के विवाह की [illegible] बताई गई है।'

प्रकाश कुमार त्रिपाठी

हित्यिक : प्रकाश प्रियांशु
न्म : 10 फरवरी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
ता : दुर्गावती देवी
ता : स्व. मोहन चंद्र त्रिपाठी
क्षा : एम. ए., बी. एड., एम. फिल., एम. एड., पी. एच. डी. [illegible]
हभाग :

- 20 राष्ट्रीय और 10 अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में [illegible] / [illegible] प्रस्तुति तथा सहभागिता।
- 15 से अधिक शोध पत्र/शोध आलेख प्रकाशित।
- लगभग 50 से अधिक काव्य [illegible]
- 25 से अधिक बांग्ला कविताओं का [illegible] में अनुवाद।
- 3 लघु फिल्मों में अभिनय, [illegible]
- 15 स्व लिखित लघु नाटकों का मंचन।

प्रकाशन : छः साझा पुस्तकें और दो संपादित पुस्तकें [illegible] साहित्य में किन्नर विमर्श प्रकाशित।

पुरस्कार :

- राम अवतार गुप्त शिक्षक सम्मान (2014)
- शिक्षा-समाज सेवा सम्मान (2016)
- काव्यश्री सम्मान (2016)
- शिक्षक नवाचार सम्मान (2016)
- साहित्य मनीषी सम्मान (20[illegible])

संप्रति : रिसर्च स्कॉलर एवं [illegible]
अनुप्रेष : prakashpriya[illegible]

प्रगति प्रकाशन
114, [illegible]

स्त्री विमर्श और आज का संदर्भ - संपादक - प्रकाश कुमार त्रिपाठी - सह संपादक - मीना पूर्व तिवारी

स्त्री विमर्श और आज का संदर्भ

सं. संपादक
प्रकाश कुमार त्रिपाठी

Contents

Chapters	Page No.
1. Federalism *(Tara Chand)*	01-11
2. Cultural Hybridity in Crete under Venetian Rule: Power, Resistance and the Formation of New Identities *(Constantina Corazon Argyrakou and Stavroula Koukouna)*	13-36
3. Behavioral Insights and Solutions for Climate Change *(Mahima Singh and Anmol)*	37-62
4. Zimbabwe's Democratization: The Consummation of Robert Mugabe's 37-Year Reign *(Maxwell Boateng and Prince Kyekyeku Boateng)*	63-74
5. Dynamics of Factionalism in Ghana's New Patriotic Party *(Maxwell Boateng)*	75-96
6. Micro-Influencers' Impact on Travel Decisions: Examining Instagram's Visual Content, Engagement Techniques and Social Proof *(Anshel Resiba S K)*	97-115
7. Surrogacy: An Indian Scenario *(Vishnupriya Dadhich)*	117-132
8. Trauma and Historiography: Contemporary Trends in Trauma Studies and Historical Representation *(Mavadevi M)*	133-144
9. Application of Logit Regression in Social Sciences *(Gursharan Kaur)*	145-151

Scanned with OKEN Scanner

Indexing and Abstracting in Following Databases

Crossref

Peer Reviewed & Refereed

Recent Trends In Humanities and Social Sciences

VOLUME - 18

Chief Editor
Babita Labh Kayastha

Co-Editor
Dr. Arun Kumar

ISBN 9789361353215
₹ 728 US $17

Published by
AkiNik Publications

AkiNik Publications

Scanned with OKEN Scanner

AkiNik Publications

Printing Press License No.: P.1 (A-4) press 2016

Publication Certificate

Ref. No.: RTHSS-18-0101
Date: 04-03-2025

To,
Dear Tara Chand

This certificate confirms that **Tara Chand** is the author of book chapter titled **"Federalism"** of published book entitled **"Recent Trends In Humanities and Social Sciences (Volume - 18)"** having ISBN **978-93-6135-321-5.**

Yours Sincerely,

Brij Mohan Gupta
Manager
AkiNik Publications

Scanned with OKEN Scanner

IOSR Journal of Humanities and Social Science

IOSR Journals
International Organization of Scientific Research

e-ISSN : 2279-0837 Volume : 29 Issue : 9 Series 3 p-ISSN : 2279-0845

IOSR-JHSS

Contents:

A Aplicação Do Direito Administrativo Na Gestão Pública	01-06
Federalism	07-10
O Papel do Brasil como Principal Articulador Político, Estratégico e Ambiental da Amazônia Internacional no Século XXI	11-17
How Do Political Changes Influence Stock Market Performance In Emerging Economies?	18-22
The Role Of Traditional Rulers In Curbing Farmer Herder Conflict In Ukum Local Government Area Of Benue State, 2011-2023	23-31
Casual Racism Against Kashmiri Students And Their Otherization	32-48
Direito Ambiental: Perspectivas Para A Adoção De Práticas Sustentáveis Nas Organizações	49-53
Family Social Work Interventions Model To Promote Family Cohesion Among The Users Of Social Media In Uasin-Gishu County, Kenya	54-63
Appropriate Technological Innovation Towards An Independent Village Based On Agrotourism In Sumbergedang Village	64-70

Peer Reviewed Refereed Journal

IOSR Journals

IOSR Journals
International Organization of Scientific Research

International Organization of Scientific Research
Community of Researchers

Is hereby honoring this certificate to

Tara Chand

In recognition of the Publication of Manuscript entitled

Federalism

Published in IOSR Journal of Humanities and Social Science

Volume 29, Issue 9, Series 3, September 2024

E-mail id : jhss@iosrmail.org
Web.: www.iosrjournals.org
IOSR-JHSS is peer reviewed refereed journal approved by UGC.

Editor-in-Chief
IOSR-JHSS

Scanned with OKEN Scanner

IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Sanskrit and Rajniti: Kutneeti aur Shaskiya Vyavastha

Tara chand
Assistant Professor Political Science
Govt. Sanskrit College Nahan

Abstract

This paper explores the profound and sophisticated political theories of kutneeti (diplomacy and strategy) and shaskiya vyavastha (governance systems) in classical Sanskrit literature. By analyzing texts such as the *Mahabharata* , *Ramayana*, *Arthashastra*, and *Dharmashastras*, this research highlights the relevance of these ancient political philosophies to the modern era. The paper examines the essential components of governance, diplomacy, statecraft, and leadership, as understood in ancient India, and draws parallels with contemporary political systems.

1. Introduction

Sanskrit, often regarded as the "language of the gods" in Indian tradition, is not only the medium for spiritual and philosophical knowledge but also a repository of deep political thought. Ancient texts in Sanskrit provide insights into governance, diplomacy, and military strategy. From the ethical dilemmas in the *Mahabharata* to the pragmatic statecraft of Kautilya's *Arthashastra*, the political wisdom embedded in Sanskrit texts has transcended centuries.

Sanskrit literature, an integral part of ancient Indian thought, encompasses a vast array of topics, including politics, governance, and diplomacy. The terms **kutneeti** (diplomacy and strategy) and **shaskiya vyavastha** (governance systems) appear frequently in texts like the *Arthashastra*, *Mahabharata*, and *Vedas*, reflecting the sophisticated political philosophies of ancient India. These texts provide insights into statecraft, war strategies, diplomacy, and governance, many of which remain relevant to contemporary political thought.

Scanned with OKEN Scanner

IJNRD | editor@ijnrd.org

WWW.IJNRD.ORG

INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT

International Peer Reviewed & Refereed Journals, Open Access Journal | ISSN: 2456-4184

Scholarly Open access journals, Peer-reviewed, and Refereed Journals, Impact factor 8.76 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool), Multidisciplinary, Monthly, Indexing in all major database & Metadata, Citation Generator, Digital Object Identifier(DOI), Monthly, Multidisciplinary and Multilanguage (Regional language supported)

Publisher and Managed by: IJPUBLICATION

Impact factor: 8.76 | ESTD Year: 2016

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation

ISSN 2456-4184

9 772456 418401

Scanned with OKEN Scanner

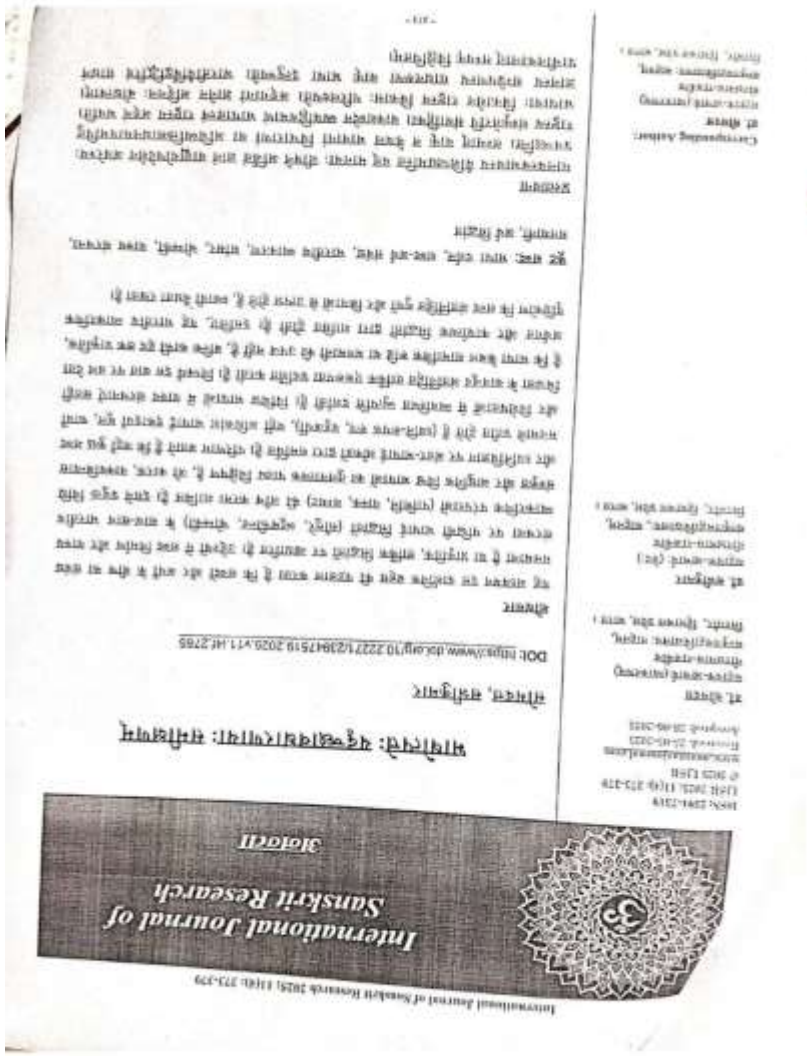

Scanned with OKEN Scanner

PUBLICATION CERTIFICATE

This publication certificate has been issued to

Dr Gyaneshwar Sharma

For publication of research paper titled

वैदिकवाङ्मये ज्योतिषशास्त्रस्य वैशिष्ट्यम्

Published in

Sahitya Samhita (साहित्य संहिता) ISSN 2454 2695

Vol: *10* Issue: *9* Month: *September* Year: *2024*

Impact factor: *6.832*

The journal is indexed, peer reviewed and listed in Google Scholar

Editor

Sahitya Samhita (साहित्य संहिता) ISSN 2454 2695

Note: This eCertificate is valid with published papers and the paper must be available online at https://www.sahityasamhita.org/index.php/ss

Scanned with OKEN Scanner

[illegible], ISSN [illegible] (UGC care listed), पृ० [illegible]

प्रत्ययपरिशीलनम्

डॉ० सोमदत्तः
[illegible]-राजकीय-संस्कृत-महाविद्यालयः, [illegible]
जिला सिरमौरः (हिमाचलप्रदेशः)

[illegible]

Scanned with OKEN Scanner

Volume 11, Issue 3 www.ijrar.org (E-ISSN 2348-1269, P-ISSN 2349-5138)
IJRAR.ORG
E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रहबिम्बदर्शने वैदिकवेधपरम्परा

डा. ज्ञानेश्वरशर्मा
सहायकाचार्यः, ज्योतिषविभागः
गोरक्षनाथ-राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयः नाहनम्

तोषितस्तपसा तेन प्रीतस्तस्मै वरार्थिने।

ग्रहाणां चरितं प्रादान्मयाय सविता स्वयम्।।[1]

शास्त्रप्रमाणेनानेन ग्रन्थस्यास्यापौरुषेयत्वं निश्चेतुं शक्यते। यतो हि विष्णुर्हि भगवान् सूर्य यत्कालचक्रज्ञानं रहस्यन्तु सृष्ट्यादावुपदिदेश तदेवाद्यं[2] सौरगणितम्। गणितागतग्रहाणां वेधोपलब्धग्रहैः सार्धं साम्यं यथा सम्भवेत् तथा कालभेदेन पूर्वोक्तमेव शास्त्रं प्रवक्ष्यामि इति भणितम्[3]। ग्रहस्पष्टीकरणे दृगुपलब्धग्रहाणां महत्त्वं सर्वैरपि ज्ञायत एव। ग्रहाणां दृगुपलब्धिः वेधविधिना एव भवति। तस्मिन् वेधकर्मणि आकाशस्थग्रहपिण्डानामनेके दृग्विषयाः सम्मुखमायान्ति। एते सर्वेऽपि विषयाः ग्रहगणितस्य प्रामाणिकतायाः साधने दर्शने वा उपकारकाः भवन्ति।

दृक्तुल्यताप्रसङ्गे वेधस्योपयोगिता न स्यादिति नास्ति विश्वासस्य विषयः। यतो हि गणितागतग्रहाः दृक्तुल्याः भवन्ति, पुनश्च वेधसहायकोपकरणानां वर्णनमपि सूर्यसिद्धान्तस्य ज्यौतिषोपनिषदाध्याये विशदरूपेण प्राप्यते। तत्रादौ स्वयंवहः नामगोलयन्त्रस्य निर्माणविधिः भ्रमणप्रकारश्च प्रदर्शितो वर्तते।[4] पुनः स्वयंवहतासम्पादकानां बीज-शङ्कु-कपाल-मयूरयन्त्रादीनाञ्च वर्णनमुपलभ्यते।[5] यन्त्रनिर्माणे जलं, सूत्रं, रज्जुः,

1. सूर्यसिद्धान्तः-मध्यमाधिकारः-श्लोकसं.-४
2. शास्त्रमाद्यं तदेवेदं यत्पूर्वं प्राह भास्करः। सूर्यसिद्धान्तः-मध्यमाधिकारः, श्लोकसं.-१
3. तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः। प्रयान्ति तत् प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्।। सूर्यसिद्धान्तः-स्पष्टाधिकारः-श्लोकसं.-१४
4. सूर्यसिद्धान्तः-ज्यौतिषोपनिषदाध्यायः-श्लोकसं -१६-१७
5. सूर्यसिद्धान्तः-ज्यौतिषोपनिषदाध्यायः-श्लोकसं.-२०-२१

Volume 11, Issue 9 www.jetir.org (ISSN-2349-5162)
JETIR.ORG
ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भूपरिधिनिर्धारणम्

डा. ज्ञानेश्वरशर्मा
सहायकाचार्यः, ज्योतिषविभागः
गोरक्षनाथ-राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयः नाहनम्

भूमेः परिधि एव भूपरिधि उच्यते। भास्कराद्यैराचार्यैः लङ्कादेशस्य स्थितिः भूमेः मध्यभागे स्वीकृता। तस्माद् लङ्कादेशीय भुवो वृत्तपरिणाहो मध्यभूपरिधिः स्वीकृता यच्च ध्रुवस्थानान्नवत्यंशव्यासार्धेन उत्पद्यते। यद्यपि भूगोलेऽस्मिन् यत्र कुत्रापि मध्यस्थानं भवितुमर्हति, परन्तु व्यवहारार्थमेकस्य एव प्रदेशस्य मध्यमानस्यावश्यकता भवति। यद्यपि अस्माकमाचार्यैः स्थाननिर्धारणार्थं गणितादिविविधप्रक्रिया प्रतिपादनार्थं मेरुस्थानान्नवत्यंशान्तरितेषु भूपृष्ठोपरि लंका-यमकोटि-रोमकपतन-सिद्धपुरेति नगर्यः पारिकल्पिताः।[1] एताः चतस्रो नगर्योरन्योन्यं परस्परं भूपरिधेः चतुर्थांशान्तर्गता चतुर्दिक्षुप्रतिष्ठिताः विद्यन्ते। पुनश्च एताः मेरुमध्याद् चतस्रोऽपि नगर्यो नवत्यंशान्तरेषु वर्तते। अर्थात् मेरुस्थानाद् इयं यमकोटि पूर्वस्यां, मेरोर्याम्ये लंका, पश्चिमे रोमकपतनम् उत्तरे च सिद्धपुरी आचार्यैः कल्पिता। अत्र भूपृष्ठस्य प्रमुखस्थानेषु लङ्का एव भूमध्यत्वेन स्वीकृता। अतः लंकादेशीया परिधिः एव भुवः परिधिः तदेव मध्यभूपरिधिः परिगण्यते।

वस्तुतः इयं भूपरिधिः अक्षांशभेदेन सर्वेषामपि भूप्रदेशानां भिन्ना-भिन्ना भवति। अतः देशभेदेन स्व-स्वस्थानस्य परिधिः स्फुटपरिधिः व्यवह्रियते। पुनश्च स्फुटपरिधे आनयनमपि मध्यभूपरिधिवशादेव अनुपातमाध्यमेन क्रियते।

साम्प्रतं भूपरिधिमानस्य आनयनं किमर्थमिति उच्यते। वस्तुतः प्राच्यकाले तु दैर्ध्यविस्तारयोः परिमाणज्ञानं योजनमानेनैव क्रियते स्म। यतो हि गोलाकारा निराधारा खे स्थिता इयं भूमिः बहुविस्तृतास्ति। ग्रहाणां स्थितिस्तु आकाशे भवति, पुनश्च तेषामवलोकनं भूतले भवति। भूमौ स्थानभिन्नाद् ग्रहस्पष्टीकरणार्थं कस्यचित् संस्कारस्यावश्यकता भवति। तेषु संस्कारेषु प्रथमसंस्कारनिमित्तं प्रयोजनं भवति भूपरिध्यानयनस्य। तस्य आनयनस्य विधिः सूर्यसिद्धान्ते इत्थं प्रोक्ता –

1. सूर्यसिद्धान्तः भूगोलाध्यायः श्लो.सं. ३८-४१

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

[illegible] Sanskrit E-Journal (The First Unpaid Sanskrit E-Journal) [illegible] Issue [illegible] 2023 [illegible]
Since 2010
ISSN- 0976-8645
UGC [illegible]

[illegible] रघुवंशदर्पणम्, [illegible] -1973
[illegible] मिश्रः(श्रीकृष्णमिश्रः), [illegible] -1932
[illegible], आर्यभटीयम्, [illegible] -1906
[illegible], [illegible], Indian Institute of Astronomical and Sanskrit Research, New Delhi-1966
New Catalogue of Catalogorum ,Published by IIT Madras
P. K. Gode, Studies in Indian Literary History, Volume -1 Published - 1953
Catalogue of the Sanskrit Manuscripts in the Library of the India Office, Volume 2
M. Krishnamachariar, History of Classical Sanskrit Literature, TTD Press, Madras -1937
[illegible] दीक्षितः, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, [illegible] 1969

डॉ [illegible] [287]

मुख्यशब्दाः- [illegible], कर्मकाण्ड, [illegible], संस्कृतिः, भाषा, [illegible], [illegible]-विकासः, [illegible], [illegible]-विकासः।

शोधसारः- [illegible]

ज्ञानकाण्डे उपदिष्टं [illegible] वैदिकं ज्ञानं कर्मकाण्डानुष्ठानेन व्यवहारे सम्पादितम्। [illegible]

[illegible]

[illegible]

वैदिकानुष्ठानविधीनां [illegible]

शोधनिबन्धः - वैदिकानुष्ठानादिना कृतं कर्मकाण्डमिति शब्दः वैदिकवाङ्मये बहुधा [illegible] तत्र कर्मकाण्डमिति शब्दः कर्म इति

[287] [illegible]

The Śāstramañjuṣa - शास्त्रमञ्जूषा - 17th Issue - Vol. IX - December, 2023
https://sites.google.com/site/[illegible]/sastramanjusa

हिमाचलप्रदेशस्य प्राचीनाभिलेखेषु पाण्डुलिपिषु च संस्कृतम्

Sanskrit in Ancient Inscriptions and Manuscripts of Himachal Pradesh

Dr. [illegible] Kumar

Abstract

Ancient manuscripts, inscriptions, copper and other metal leaf inscriptions demonstrate the historical importance of the literary wealth of the region. Due to the availability of Bhurja leaves in Himachal Pradesh, manuscripts written on Bhurja leaves are abundant in this region. Similarly, various inscriptions and pillar inscriptions are found in many temples in this snow-covered region. In the diverse environment of Himachal Pradesh, preservation of manuscripts written on handmade brown paper and other materials for a long time is a very difficult task.. Sanskrit is often the predominant language in terms of language. The manuscripts, inscriptions and columnar inscriptions in various scripts like Sharada, Tankari and Pavuchi in Himachal Pradesh are mostly devoted to Sanskrit. This research paper describes the nature of Sanskrit in the inscriptions of King Meruvarman, the inscriptions of King Sahilvarman, the copperplate inscriptions of Yugakaravarman, and various manuscripts. A rich tradition of Sanskrit is still prevalent in Himachal Pradesh. This paper presents the glorious history of Sanskrit in Himachal Pradesh by reviewing inscriptions, copperplates and other inscriptions and ancient manuscripts.

कूटशब्दाः- पाण्डुलिपिः, अभिलेखः, हिमाचलप्रदेशः, [illegible], टाकरी, शारदालिपि, [illegible], [illegible]

हिमाचलप्रदेशः भारतस्य उत्तरभूभागे विद्यमानः अतीव रमणीयः प्रदेशः। यद्यपि राजनैतिकदृष्ट्या पूर्णराज्यरूपेण अस्य सङ्घटनं 1971तमे वर्षेऽभवत् तथापि ऐतिहासिकदृष्ट्या अस्य भूभागस्य महत्त्वमत्यधिकं प्राचीनं वर्तते। हिमाचलप्रदेशः [illegible] उत्तुङ्गशिखरैः सुहरितैः रमणीयैः वनप्रान्तैः, स्वच्छनिर्मलतोयनदीभिः, पावननीर्थैः सह युक्तः, भौगोलिकदृष्ट्या यादृशं विविधतापूर्णं सुशोभते तादृशमेव संस्कृतवाङ्मयमन्दाकिन्या आप्लावितं वर्तते। अत्र पुराकालादारभ्य अद्यावधि संस्कृतसाहित्यस्य अजस्रं धारा सततं प्रवहमाना दृश्यते। हिमाचलप्रदेशस्य [illegible] शासनकाले संस्कृतसाहित्यस्योत्कर्षं समाने संस्कृतस्य प्रचारप्रसारार्थं सर्वदा [illegible] [illegible]। अतस्तानां राजवंशानां नृपाः प्रायः संस्कृतज्ञाः संस्कृतानुरागिणश्चासन्। वैदिककालादारभ्य अस्यां [illegible] संस्कृतवाङ्मयस्य विपुलाः रचनाः अभवन्, पुनः कालान्तरेऽपि अत्रत्यैः विद्वद्भिः संस्कृतकविभिश्च [illegible] विविधासु धारासु साहित्यं परिसृष्टम्। अस्मिन् भूभागे अत्यधिकमात्रायामुपलब्धाः पाण्डुलिपयः [illegible] अस्य प्रमाणभूतास्सन्ति। यद्यपि अनेकेषां ग्रन्थानां पाण्डुलिपयः कालकवलिताः तथापि हिमाचलप्रदेशे प्राचीनाभिलेखानां पाण्डुलिपीनाञ्च विपुलसम्पदा अद्यत्वेऽपि उपलब्धा वर्तते।

[illegible] प्राचीनहस्तलिखितो ग्रन्थः, कश्चित् कवेः प्राचीनहस्तलिखिता कृतिर्वा 'पाण्डुलिपिः' इत्युच्यते। [illegible] पाण्डुलिपीनां कृते 'मातृकाग्रन्थः', '[illegible]' 'हस्तप्रतिः', 'लिपिग्रन्थ' इत्यादीनि नामान्यपि प्रचलितानि सन्ति। [illegible] यथा साम्प्रतं संस्कृतं देवनागरीलिप्या लिख्यते, पूर्वकाले ब्राह्मीलिप्या संस्कृतं लिख्यते स्म। [illegible] संस्कृतं लिखितं साहित्यमपि विश्वस्य प्राचीनतमं साहित्यं वर्तते। [illegible] अपि प्राचीनतमानि

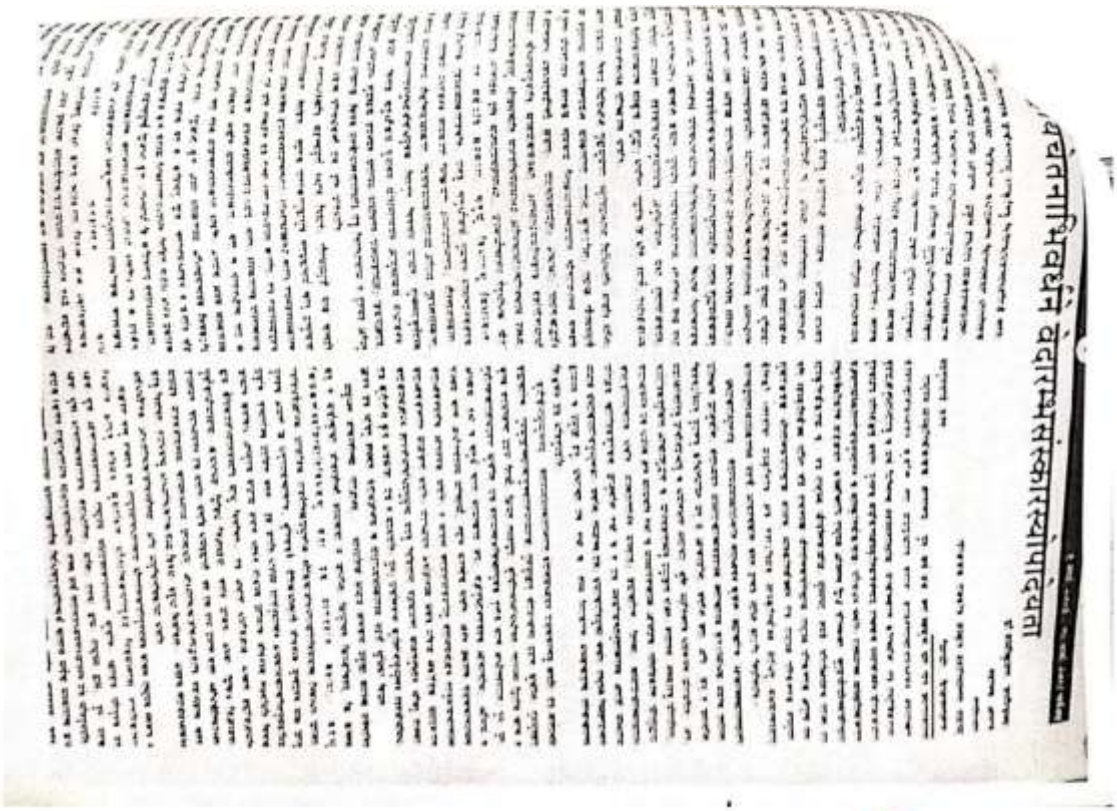

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

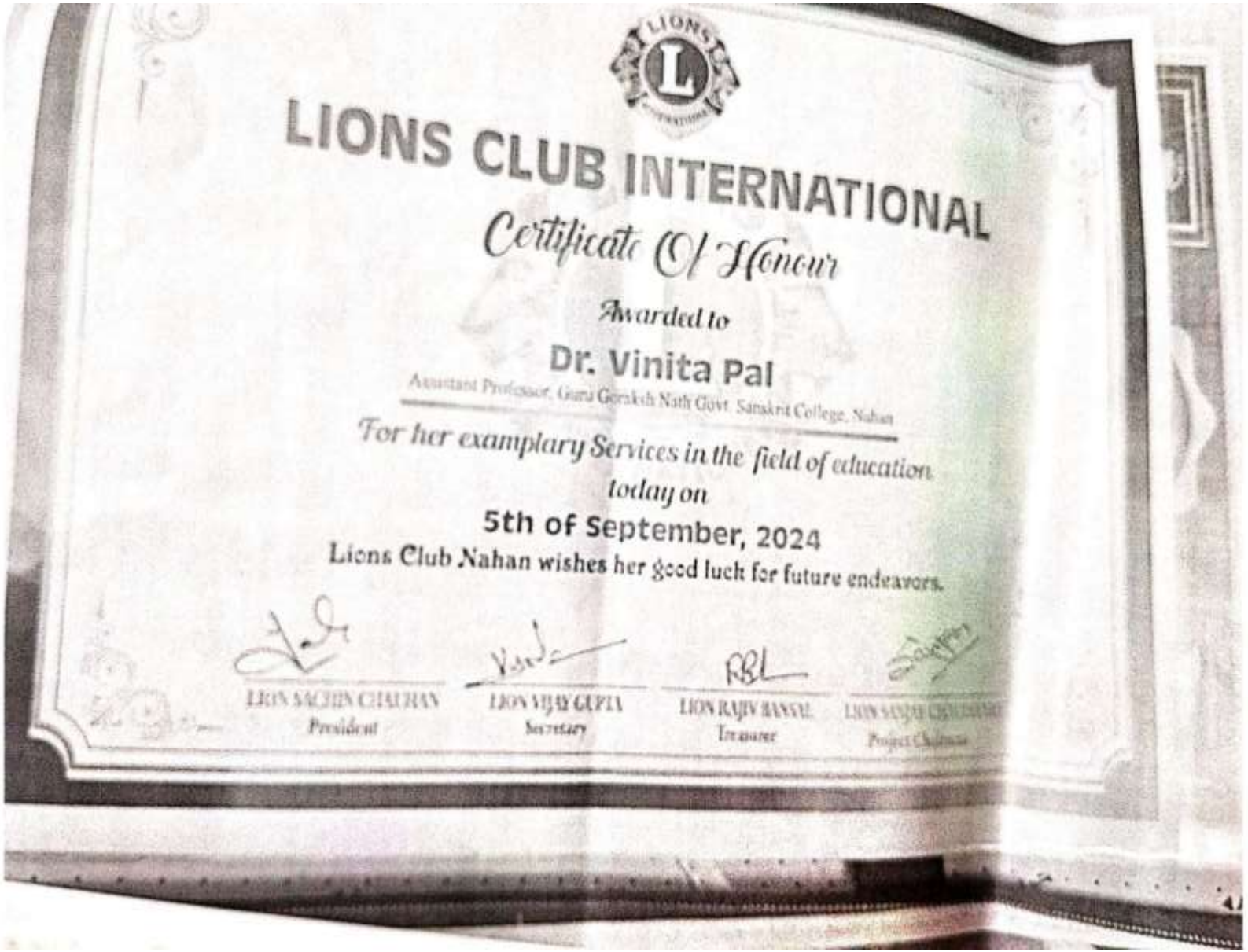

LIONS CLUB INTERNATIONAL

Certificate Of Honour

Awarded to

Dr. Vinita Pal

Assistant Professor, Guru Gorakh Nath Govt. Sanskrit College, Nahan

For her examplary Services in the field of education

today on

5th of September, 2024

Lions Club Nahan wishes her good luck for future endeavors.

LION SACHIN CHAUHAN
President

LION VIJAY GUPTA
Secretary

LION RAJIV BANSAL
Treasurer

Scanned with OKEN Scanner